नं.३६९ मति-श्रुत-ज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ अवि	१ संअ.	६ अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	२ पु.न.	४	२ मति. श्रुत.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा ६.	१ भ.	३ औपक्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

संजदासंजदप्पहुडिं जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ भंगो। णवरि आभिणिबोहिय सुदणाणाणि वत्तव्वाणि। एवमोहिणाणं पि वत्तव्वं। णवरि ओहिणाणं एक्कं चेव भाणिदव्वं। णाण-दंसणमग्गणाओ जेण खओवसममस्सिऊण ट्ठिआओ तेण मदिसुदणाणेसु णिरुद्धेसु दोहि तीहि चउहि वा ओहि-मणपज्जवणाणेसु णिरुद्धेसु तीहि

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल

लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह हैं कि ज्ञान आलाप कहते समय आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञान ही कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानी जीवोंके आलाप जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहांपर पूर्वोक्त दो स्तानमें एक अवधिज्ञान ही कहना चाहिए।

शंका --- जब कि मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणा और चक्षुदर्शनादि क्षायोपशमिक दर्शन मार्गणाएं अपने अपने आवरणीय कर्मोंके क्षायोपशमके आश्रयसे स्थित हैं, तब मति-ज्ञान और श्रुतज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहनेपर दो, तीन अथवा चार ज्ञान; तथा अवधिज्ञान

चउहि वा णाणेहि होदव्वमिदि? सच्चमेदं, किंतु इयरेसु संतेसु वि ण विवक्खा कया, तेण विवक्खिय-णाण-वदिरित्त- णाणाणमवणयणं कयं।

मणपज्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणं, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, वेदगसम्मत्तपच्छायदुवसमसम्मत्तसम्माइट्ठिस१ (उवसमचरियाहिमुहो वेदगसम्मो अणं विजोयित्ता। अंतोमुहुत्तकालं अधापमत्तो पमत्तो य| तत्तो तिरयणविहिणा दंसणमोहं समं खु उवसमदि। ल. क्ष. २०३, २०४.) पढमसमए वि मण-

---

और मन:पर्ययज्ञान-निरुद्ध आलापोंके कहनेपर तीन अथवा चार ज्ञान होना चहिए?

विशेषार्थ --- शंकाकारके कहने का यह भाव है कि जब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान क्षायोपशमिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मन: पर्ययज्ञान हो सकते हैं; तब विवक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणाके आलाप कहते समय अपने सिवाय शेष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए। अर्थात्, छद्मस्थ जीवोंके कमसे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते हैं; तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मन: पर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मन:पर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानी और मन: पर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय-क्रमश: मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मन:पर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए।

समाधान --- आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होनेपर भी उनकी विवक्षा नहीं कि गई है; इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है।

मन:पर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहनेपर--- प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक संज्ञी- पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मन:पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, तीन सम्यक्त्व होते हैं; मन:पर्ययज्ञानीके औपशमिक सम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो वेदकसम्यक्त्वसे पीछे

पज्जवणाणुवलंभादो। मिच्छत्तपच्छायद उवसमसम्मइट्ठिम्मि मणपज्जवणाणं ण उवलब्भदे; मिच्छत्तपच्छायदुक्कस्सुव-समसम्मत्तकालादो वि गहिदसंजमपढमसमयादो सव्वजहण्णमणपज्जवणाणुप्पायणसंजमकालस्स वहुत्तुवलंभादो। सण्णिणो, आहारिणो,

---

द्वितीयोपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशमसम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें भी मन:पर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि जीवमें मन:पर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टिके उपशमसम्यक्त्वके उत्कृष्ट कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे लगाकर सर्व जघन्य मन:पर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है।

विशेषार्थ --- यहाँ मन:पर्ययज्ञानीके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं। क्षायिक और क्षायोपशमिकसम्यक्त्वके साथ तो मन:पर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मन:पर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है। अब रही औपशमिक सम्यग्दर्शनकी बात, सो उसके प्रथमोपशमसम्यक्त्व और द्वितीयोपशमसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं। उनमें प्रथमोपशमसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है। यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मन:पर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है। इसलिये प्रथमोपशम सम्यक्त्वके कालमें मन:पर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण कारण मन:पर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है। द्वितीयोपशमसम्यक्त्व उपशमश्रेणीके अभिमुख विशेष संयमीके ही होता है, इसलिये यहाँपर अलगसे मन:पर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमको उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मन:पर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है। अथवा जिस संयमीने पहले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मन:पर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशमश्रेणीके अभिमुख होनेपर द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मन:पर्यायज्ञान पाया जा सकता है। यहाँ टीकामें 'पढमसमए वि ' में जो अपि शब्द

आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयादिक समयमें वर्द्धमान चारित्र रहता है, इसलिये वहाँ तो मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी संयममें इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मन:पर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है। इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशमसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मन:पर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है। परन्तु द्वितीयोपशमसम्यक्त्व संयमीके ही होता है, इसलिये उसमें मन:पर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विरोध नहीं है। प्रकार मन:पर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्तव तो होते हैं, किन्तु औपशमिकसम्यक्त्वमें द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए, प्रथमोपशमका नहीं। सम्यक्त्व

सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा३७०।

नं.३७० मन:पर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
७ प्रम. से क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	४ क्षीण सं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	१ पु.	४ अकषा.	१ मन:.	४ सामा. छेदो. सूक्ष्मा.यथा.	३ के.द. विना	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मणपज्जवणाण-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि मणपज्जवणाणं एक्कंचेव वत्तव्वं। परिहारसुद्धिसंजमो वि णत्थि त्ति भणिदव्वं।

केवलणाणीणं भण्णमाणे अत्थि वे गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुस्सगदी, सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहक्खादसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि

आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मन:पर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मन:पर्ययज्ञान ही कहना चाहिए। तथा संयम आलाप कहते समय परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहनेपर--- सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा समुद्घातगत अपर्याप्तकालमें आयु और कायबलये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकषायस्थान भी है, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धि-

---

अत्थि, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति३७१।

नं.३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ सयो. अयो. अती. गु.	२ प. यो. अप. अती. जीव.	६ प. ६ अ. अती. पया.	४ २, १ अती. प्राण	० क्षीणसं.	१ म. रिा.	१ पं. अती.	१ त्र. अका.	७ म. २ व. २ औ. २ काम.१ अयो.	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा. अनुभय	१ केद.	द्र. ६ भा.१ शुक्ल. अले.	१ भ. अनु.	१ क्षा.	० अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. युउ.

सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा।

एवं णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस-सत्त-चत्तारि-दो-एक्क-पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा अजोगो वि

संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिकसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोके आलाप कहनेपर--- प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण ; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद

अत्थि, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, पंच संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागर अणागारेहिं जुगदुवजुत्ता वा होंति३७२।

नं.३७२ संयमी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	इा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संइिा	आ.	उ.
९ प्रम. सेअया`.	२ सं. प. सं. अ	६ प ६ अ.	१० ७ ४ २ १	४ क्षीणासां.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ ३ वै. द्वि. विना. यो.	३ अपग.	४ अकषा	५ मति. श्रुत. अव. मन:. केा.	५ सामा. छेदो. परि. सू।म. यथा.	४	द्र. ६ भा. ३ शुभ. अले.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाणा-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ;

तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मतिज्ञानादि पांचो सुज्ञान, सामायिकादि पांचों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

संयममार्गणाकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्र-काययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व , संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३७३।

नं.३७३ संयमकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	स्ं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	१	१	१	११	३	४	४	३	३	द्र.	१	३	१	१	२

प्र.	सं. प. सं. अ.	प ६ अ.	७		म.	पंचे.	त्र स.	म. ४ व. ४ औ .१ आ हा. २			मति श्रुत. अव. मन:	सामा. छेदो .परि.	के द. विना.	६ भा. ३ शुभ.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ आहारसण्णा णत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुजुत्ता वा३७४।

नं.३७४ संयमकी अपेक्षा अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	व.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा	१ म.	१ पंचे.	१ त्र स.	९ म. ४ व.	३	४	४ मति. श्रुत	३ सामा.	३ के द. वि	द्र. ६ भा .३	१ भ.	३ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा	२ साका अ

				. वि ना .				४ औ .१			ा. अव ा. म नः .	छे दो . प रि .	ना .	शु भ .		क्षाय ो.		.	ना.

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव अजोगिकेव्वलि त्ति त्ताव मूलोघ-भंगो।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, भय, मैथुन और परिग्रह ये तीन संज्ञाएं होती हैं किन्तु यहाँपर आहारसंज्ञा नहीं है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्वलि गुणस्थानतक संयमी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

सामाइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म- सुक्कलेसाओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३७५।

नं.३७५ सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
४ प्र. अप्र. अपू. अनि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ औ.१ आ.२	३ अपग.	४	४ मति.श्रुता. अव. मनः.	१ सामा.	३ केद. विना.	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। एवं छेदोवट्ठावण संजमस्स वि वत्तव्वं।

परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो,

----

सामायिक शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास,

छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग , आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज,पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिकशुद्धि संयतोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि संयम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंयम ही कहना चाहिए। इसीप्रकार छेदोपस्थापना-संयमके भी आलाप जानना चाहिए; किन्तु संयम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना-संयम ही कहना चाहिए।

परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके अलाप काहनेपर--- प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत

छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा आहार-आहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि मणपज्जवणाणं णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुध्दिसंजमो१ (मु. संजमो एदे जुग।) एदाओ तिण्णि रिध्दीओ जुगवदेव ण उप्पज्जंति। परिहारसुध्दिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिध्दिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३७६।

नं.३७६ परिहारविशुध्दिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	व.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.

											.								
२ प्र. अ.	१ सं .प.	६	१ ०	४	१ म.	१ प ंच ो.	१ त्रस ा.	९ म. ४ व. ४ अ ौ. १	१ प ु.	४	३ म ति.	१ प रि.	३ के द. वि ना.	द्र. ६ भा .३ शु भ.	१ भ.	२ क्षा . क्षा यो.	१ सं.	१ अ ाह ा.	२ स ाक ा. अ ना.

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुध्दिसंजदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओघ-भंगो। णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण-उवसमसम्मत्त-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजमा च णत्थि। परिहारसुध्दिसंजमो एक्को चेव संजमट्ठाणे। वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो।

ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहाँपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं। पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहाँपर मन:पर्यय-ज्ञान नहीं हैं; क्योंकि, आहारकद्विक, मन:पर्ययज्ञान और परिहारविशुध्दिसंयम ये तीनों ऋध्दियां युगपत् नहीं उत्पन्न होती हैं। ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुध्दिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत-परिहारविशुध्दिसंयत और अप्रमत्तसंयत-परिहारविशुध्दिसंयत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहनेपर उनके आलाप ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि यहाँपर आहारककाययोगद्विक, मन:पर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुध्दिसंयम और

छेदोपस्थापना शुध्दिसंयम इतने आलाप नहीं होते हैं। संयमस्थानपर एक परिहारविशुध्दिसंयम ही होता है। तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए।

सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ-भंगो।

जहक्खादविहारसुध्दिसंजदाणं१ (मु. क्खादसुध्दि।) भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एक्कपाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाणाणि, जहक्खादसुध्दिसंजमो, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिध्दिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा३७७।

नं.३७७ यथाख्यात शुध्दिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ उ. क्षी. स. अ.	२ सं.प. अप.	६प. ६अ.	१० ४ २ १	० क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रसका.	११ म.४ व.४ औ.२	० अपगा.	० अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. म	१ यथा.	४	द्र. ६ भा. १ शुक्ल. अले.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु.

								क ा. १			न: के व.								उ .

उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेव्वली त्ति मूलोघ-भंगो । संजदासंजदाणं मोघ-भंगो ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर उनके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए।

यथाख्यातविहारशुध्दिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, संयोगिकेव्वली और अयोगिकेव्वली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; अपगतवेद, अकषाय, मतिज्ञानादि पांचों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुध्दिसंयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिध्दिक, वेदकसम्यक्त्वके विना शेष दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्वली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार-

---

असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि,

दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३७८।

नं.३७८ असंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१४	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ. ४प. ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,

----

शुध्दिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

संयतासंयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

असंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच

प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- आदिके चार गुणस्थान,

---

छ पज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३७९।

नं.३७९ असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
४ मि. सा. स.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१ ० म. ४ व. ४ अ	३	४	६ ज्ञा न. ३ अ ज्ञा. ३	१ असं.	३ के द. वि ना.	द्र. ६ भा .६	२ भ. अ.	६	२ सं. अ सं.	१ आ हा.	२ साका. अना.

अ .								ौ. १ वै. १											

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयत, जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदिके पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान

कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३८०।

नं.३८० असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अ.	७ अप.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ अौ. मि. वै. मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति मूलोघ-भंगो।

एवं संजममग्गणा समत्ता।

दंसणाणुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो।

चक्खुदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

ये पांच ज्ञान; असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतकके असंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई।

दर्शन मार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रियपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रियञ्अपर्याप्त, संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये छह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि

गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, चक्खुदंसणं, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३८१।

नं.३८१ चक्षुदर्शनी जीवों के सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संया.	द.	ले.	भा.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से. क्षी.	६ च.प. च.अ. असं.प. असं.अ. सं.प. सं.अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१०,७ ९,७ ८,६	४ क्षीणसं.	४	२ पंचे. चा.	१ त्रस.	१५	३ अपगा.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भा. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी दो जादीओ, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, चक्खुदंसणं, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ,

----

दो जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी हैं, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; अहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३८२।